फूड इंडस्ट्री आज केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें स्वाद, गुणवत्ता और नवाचार की अहम भूमिका हो गई है। बदलती लाइफस्टाइल और उपभोक्ताओं की बढ़ती अपेक्षाओं के बीच आइसक्रीम जैसे उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ी है। ऐसे में आइसक्रीम टेस्टर का पेशा उभरते करियर विकल्प के रूप में सामने आया है। यह काम केवल स्वाद लेने तक सीमित नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हर पहलू की जांच करना होता है। यदि आपको खाने-पीने का शौक है और आप इस पेशे में आना चाहते हैं, तो यह क्षेत्र आपके लिए आकर्षक अवसर प्रदान करता है।

आइसक्रीम टेस्टर की भूमिका

फूड इंडस्ट्री के विस्तार के साथ आइसक्रीम टेस्टर की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती जा रही है। कंपनियां लगातार नए फ्लेवर विकसित करने और प्रोडक्ट की गुणवत्ता बनाए रखने पर जोर दे रही हैं। ऐसे में प्रशिक्षित प्रोफेशनल्स की मांग बढ़ रही है, जो स्वाद, बनावट और खुशबू का सूक्ष्म विश्लेषण कर सकें। यह करियर उन युवाओं के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है, जो अपने शौक को पेशेवर रूप देना चाहते हैं। आइसक्रीम टेस्टर का कार्य केवल स्वाद चखना नहीं होता, बल्कि यह एक जिम्मेदारीपूर्ण प्रक्रिया है। प्रोफेशनल टेस्टर वैज्ञानिक तरीके से आइसक्रीम के फ्लेवर, टेक्सचर, मिठास और खुशबू का मूल्यांकन करते हैं। वे एक दिन में कई प्रकार के फ्लेवर का परीक्षण करते हैं और उनके आधार पर कंपनियों को सुझाव देते हैं, जिससे प्रोडक्ट की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

स्वाद में उज्ज्वल भविष्य की संभावना
आइसक्रीम टेस्टर

जरूरी स्किल्स

इस पेशे में सफल होने के लिए कुछ विशेष कौशलों का होना आवश्यक है-

- **स्वाद पहचानने की क्षमता :** विभिन्न फ्लेवर और मिठास के स्तर को बारीकी से समझना।
- **रचनात्मक सोच:** नए और अनोखे फ्लेवर विकसित करने की क्षमता रखना।
- **सुगंध और बनावट की समझ:** खुशबू और टेक्सचर के सूक्ष्म अंतर पहचानना।
- **धैर्य:** लगातार कई फ्लेवर टेस्ट करने के लिए मानसिक संतुलन बनाए रखना।
- **सूक्ष्म अवलोकन :** छोटे-छोटे अंतर को पकड़ने की क्षमता होना।
- **स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता:** लगातार टेस्टिंग के कारण स्वास्थ्य संतुलन बनाए रखना जरूरी है।

करियर की संभावनाएं

फूड इंडस्ट्री के तेजी से विस्तार के चलते इस क्षेत्र में करियर की संभावनाएं भी बढ़ रही हैं। आइसक्रीम कंपनियां, डेयरी ब्रांड्स और बड़ी FMCG कंपनियां क्वालिटी कंट्रोल और प्रोडक्ट डेवलपमेंट के लिए टेस्टर की नियुक्ति करती हैं। इसके अलावा रिसर्च एंड डेवलपमेंट (R&D) विभाग में भी इनकी अहम भूमिका होती है। अनुभव के साथ व्यक्ति सीनियर टेस्टर, फ्लेवर एक्सपर्ट या प्रोडक्ट डेवलपर जैसे पदों तक पहुंच सकता है।

सैलरी

शुरुआती स्तर पर इस क्षेत्र में काम करने वाले प्रोफेशनल्स को लगभग 2.5 से 3.5 लाख रुपये सालाना तक का पैकेज मिल सकता है। अनुभव और विशेषज्ञता बढ़ने के साथ यह आय तेजी से बढ़ती है। बड़ी कंपनियों में अनुभवी टेस्टर को आकर्षक वेतन और अन्य सुविधाएं भी मिलती हैं, जिससे यह करियर आर्थिक रूप से भी लाभदायक बन जाता है।

आइसक्रीम टेस्टर का पेशा उन लोगों के लिए एक अनूठा अवसर है, जो स्वाद के प्रति संवेदनशील हैं और फूड इंडस्ट्री में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं।

आवश्यक शैक्षणिक योग्यता

भारत में इस क्षेत्र के लिए कोई विशेष डिग्री निर्धारित नहीं है, लेकिन फूड साइंस या फूड टेक्नोलॉजी में स्नातक या स्नातकोत्तर डिग्री इस दिशा में मजबूत आधार प्रदान करती है। इसके अलावा डेयरी टेक्नोलॉजी जैसे विषय भी सहायक होते हैं। पढ़ाई के दौरान किसी प्रतिष्ठित फूड कंपनी या आइसक्रीम ब्रांड में इंटर्नशिप करना व्यावहारिक अनुभव दिलाने में मदद करता है, जो करियर की शुरुआत के लिए बेहद उपयोगी साबित होता है।

वर्ड स्मिथ

कहां से आया नोटिस शब्द

'नोटिस' शब्द आज हमारी रोजमर्रा की भाषा, प्रशासनिक कामकाज और कानूनी प्रक्रियाओं में बहुत सामान्य रूप से इस्तेमाल होता है, लेकिन इसकी उत्पत्ति काफी रोचक है। 'नोटिस' अंग्रेजी के notice शब्द से आया है, जिसका मूल लैटिन भाषा के शब्द notitia में मिलता है। Notitia का अर्थ होता है- 'जानकारी', 'सूचना' या 'ज्ञान'। यही शब्द आगे चलकर पुरानी फ्रेंच (Old French) में notice के रूप में विकसित हुआ, जिसका अर्थ था किसी बात की जानकारी देना या किसी तथ्य को सार्वजनिक करना।

मध्यकालीन यूरोप में जब प्रशासनिक और कानूनी व्यवस्थाएं विकसित हो रही थीं, तब लोगों तक सूचना पहुंचाने के लिए लिखित घोषणाओं का उपयोग बढ़ा। इन्हीं लिखित सूचनाओं को notice कहा जाने लगा। धीरे-धीरे यह शब्द अंग्रेजी भाषा में स्थायी रूप से शामिल हो गया और इसका प्रयोग किसी आधिकारिक सूचना, चेतावनी या घोषणा के लिए होने लगा। भारत में 'नोटिस' शब्द का प्रचलन अंग्रेजों के शासनकाल के दौरान बढ़ा। ब्रिटिश प्रशासन में कानूनी और सरकारी कामकाज अंग्रेजी में होता था, इसलिए notice शब्द भी सीधे भारतीय भाषाओं में आ गया। हिंदी में इसे 'नोटिस' के रूप में अपनाया गया और इसका अर्थ हुआ- किसी व्यक्ति या समूह को दी गई औपचारिक सूचना, जैसे अदालत का नोटिस, स्कूल का नोटिस या किसी संस्था की सूचना। आज 'नोटिस' केवल कानूनी शब्द नहीं रहा, बल्कि यह संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। स्कूल, दफ्तर, संस्थान और सार्वजनिक स्थानों पर सूचना देने के लिए 'नोटिस' का व्यापक उपयोग होता है, जो इसकी ऐतिहासिक यात्रा को दर्शाता है।

किसी नई जगह पर खुद को ढालने में लगता है समय

कैंपस का पहला दिन

जिस अगली सुबह मेरे कॉलेज का पहला दिन था, उस रात बेचैनी के कारण मैं सो नहीं सका। सुबह उठने में देर हुई फिर इतनी जल्दी तैयार हुआ मानो समय से न पहुंचा तो गेट पर खड़ा कर दिया जाऊंगा। आखिर इंटर कॉलेज वाले सख्त अनुशासन के माहौल की आदत जो थी। दिल में अजीब-सी हलचल थी- थोड़ा डर, थोड़ा उत्साह, थोड़ा गर्व और बहुत सारी उम्मीदें। बहरहाल नाश्ता करके मम्मी पापा का आशीर्वाद लिया और चल पड़ा अपनी स्कूटी लेकर कॉलेज की ओर। लखनऊ के रास्ते में सुबह-सुबह वाहनों के हॉर्न से गूंज रहे थे। किसी तरह मैं अपने कॉलेज बीबीडी पहुंचा। कॉलेज का गेट देखते ही दिल धक से रह गया। इतना विशाल बड़ा मैदान? ऊंची इमारतें और हर तरफ छात्र-छात्राओं की जमघट। गेट पर कुछ सीनियर वेलकम फ्रेशर्स चिल्ला रहे थे और मैं अपने नए बैग के साथ दिल की धड़कनें भी थामे हुआ था। मन में अजीब सी उधेड़बुन चल रही थी- कहां जाऊं पहले, कुछ किसी से पूछूं तो जवाब देगा कि नहीं?

हर्ष पंत
हल्द्वानी

बहरहाल एक उत्साह भी था- स्कूल की यूनिफॉर्म से आजादी, नए चेहरे, इंजीनियरिंग क्लासों के सपने जो दीवाली की रोशनी से भी चमकदार लगते थे। एक सीनियर ने तो मेरा बैग देखकर कहा, "भाई, ये तो लगता है स्कूल का बैग है!" सब हंस पड़े। मुझे भी हंसी आ गई। थोड़ा उत्साह बढ़ा और एडमिशन प्रोसेस के बाद चल पड़ा अपनी क्लास की तलाश में। कैंपस का नक्शा ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने सर्किट डायग्राम बनाकर बोला हो- ढूंढ लो अपना क्लास, अगर दम है तो। इधर-उधर भटकते बहुत मुश्किल से मैं अपनी क्लास पहुंचा। यहां पहुंचकर मुझे ऐसी उपलब्धि का एहसास हुआ मानो मैं डिटेक्टिव शरलॉक होम्स हूं और क्लास ढूंढ कर मैंने कोई बड़ा केस सॉल्व कर दिया हो।

क्लास के भीतर पहुंचते ही मैं आखिरी सीट की ओर बढ़ा, लेकिन लेट होने के कारण वो सीट भी खाली नहीं थी। फिर मायूसी को भुलाकर मैं राइट साइड की दूसरी सीट पर बैठा। वहां मेरी मुलाकात कुछ दोस्तों से भी हुई, जिनका नाम अरुण ओर अमित था। बात करने पर पता चला कि उनका भी पहला दिन था और इससे पहले वे भी गलत क्लास में चले गए थे, जहां मैनेजमेंट स्टूडेंट्स बैठे थे। हम कुछ बात कर पाते कि तभी एंट्री हुई कॉलेज के हेड की। उन्होंने हमें कॉलेज के नियम बताए। फिर कहा कुछ मन सवाल हो तो पूछो। मैंने भी स्मार्टनेस दिखाने में चूक न की और उनसे पासिंग् मार्कस पूछ लिया। इस सवाल पर पूरी क्लास हंस पड़ी। मानो मानसून की पहली फुहार। जवाब में हेड ने कहा इसका जवाब पूरी क्लास का पहला कार्यभार है। उसके बाद बाकी टीचर ने अपना कार्यक्रम बताया। जब लंच हुआ तो मैं अमित के साथ चल पड़ा कैंटीन की ओर। वहां पता चला की सीनियर्स, फ्रेशर्स को माधुरी दीक्षित के हिट गाने पर डांस करा रहे थे। कुछ ठुमके मारने के बाद हमने भी लाजवाब समोसे का लुफ्त उठाया। फिर चल पड़े वापस क्लास की ओर। वहां जाने पर पता चला कि छुट्टी हो गई है।

बाद में हम लोग बाकी दोस्तों से मिले, जो हॉस्टल में रहते थे। कोई क्रिकेटर था तो कोइ डांसर। हमने नाम और फोन नंबर एक दूसरे का जाना और फिर दोस्तों को कल मिलने का वादा कर मैं निकल पड़ा घर की ओर। घर की ओर जाते वक्त मन रोमांचित हो रहा था। रात को सोते समय बार-बार मन में यहीं आ रहा था कि कल से नई जिंदगी शुरू होगी। कॉलेज का पहले दिन भले थोड़ी उलझन लगी, लेकिन यही दिन आगे चलकर खूबसूरत सफर में बदल गया। पहला दिन हमें सिखाता है कि हर नई जगह खुद को ढालने में समय लगता है, फिर वक्त गुजरने के साथ वही जगह अपनी लगने लगती है।

कुशल रणनीति और सटीक अध्ययन से पाएं यूपीटीईटी में सफलता

यूपीटीईटी 2026 परीक्षा अब ज्यादा दूर नहीं है और लगभग 60 दिन का समय शेष है। ऐसे में यह समय आपकी तैयारी को अंतिम रूप देने का है, न कि नई शुरुआत करने का। सही रणनीति, सटीक अध्ययन और नियमित अभ्यास के माध्यम से आप इस परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। चूंकि यूपीटीईटी एक पात्रता परीक्षा है, इसलिए लक्ष्य केवल पास होना नहीं, बल्कि अच्छे अंकों के साथ सफलता हासिल करना होना चाहिए। यदि आप इन 60 दिनों का सही उपयोग करते हैं, तो न केवल आप कट-ऑफ से ऊपर स्कोर कर पाएंगे, बल्कि भविष्य के शिक्षण करियर के लिए मजबूत नींव भी तैयार कर सकेंगे।

नवनीत तिवारी
करियर काउंसर

मुख्य विषयों पर बढ़ाएं फोकस

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र पर विशेष ध्यान दें, क्योंकि इसका वेटेज दोनों पेपर में अधिक होता है। इसके साथ ही भाषा विषयों में समझ और व्याकरण को मजबूत करें। जिस पेपर की तैयारी कर रहे हैं, उसके अनुसार गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण अध्ययन पर भी ध्यान केंद्रित करें।

सिलेबस और परीक्षा पैटर्न को समझें

तैयारी के इस अंतिम चरण में सबसे पहले पूरे सिलेबस और परीक्षा पैटर्न को दोबारा अच्छी तरह समझें। यह जानना जरूरी है कि किस विषय से कितने प्रश्न आते हैं और किन टॉपिक्स का वेटेज अधिक है। इससे आप अपनी पढ़ाई को सही दिशा में ले जा सकते हैं और अनावश्यक विषयों पर समय बर्बाद होने से बच सकते हैं।

पिछले वर्षों के ट्रेंड का विश्लेषण करें

पिछले वर्षों के प्रश्नपत्रों को हल करना और उनका विश्लेषण करना बेहद जरूरी है। इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि किन विषयों से बार-बार प्रश्न पूछे जाते हैं और परीक्षा का कठिनाई स्तर कैसा रहता है। इस आधार पर आप अपनी रणनीति को और मजबूत बना सकते हैं।

सीमित और गुणवत्ता वाली अध्ययन सामग्री चुनें

इस समय नई किताबें या कई स्रोतों को फॉलो करने से बचें। केवल उन्हीं नोट्स और पुस्तकों पर ध्यान दें, जिनसे आपने पहले पढ़ाई की है। एक विषय के लिए एक ही स्रोत को फॉलो करना बेहतर होता है, इससे कंफ्यूजन कम होता है और रिवीजन आसान हो जाता है।

मॉक टेस्ट को दें प्राथमिकता

अब समय है अधिक से अधिक मॉक टेस्ट देने का। सप्ताह में कम से कम 2-3 फुल-लेंथ मॉक टेस्ट हल करें। इसके अलावा रोजाना छोटे-छोटे क्विज भी हल करें, जिससे आपकी गति और सटीकता में सुधार होगा। नियमित अभ्यास आपको परीक्षा के माहौल के लिए तैयार करेगा।

प्रदर्शन का विश्लेषण करें

हर मॉक टेस्ट के बाद अपनी गलतियों का विश्लेषण करना बेहद जरूरी है। यह समझें कि आप किन टॉपिक्स में कमजोर हैं और वहां ज्यादा समय दें। यह रणनीति आपको लगातार सुधार करने में मदद करेगी।

कांसेप्ट की स्पष्टता पर दें ध्यान

इन 60 दिनों में रटने की बजाय कॉन्सेप्ट को समझने पर जोर दें। पेपर 1 में बेसिक समझ और शिक्षण कौशल पर फोकस होता है, जबकि पेपर 2 में गहराई से समझ और उसका प्रयोग पूछा जाता है। स्पष्ट अवधारणाएं आपको हर प्रकार के प्रश्न हल करने में मदद करेंगी।

नियमित करें रिवीजन

हर सप्ताह कम से कम एक दिन केवल रिवीजन के लिए निर्धारित करें। जो भी आपने पढ़ा है, उसे दोहराना बेहद जरूरी है, वरना परीक्षा के समय याद रखना कठिन हो सकता है। छोटे-छोटे नोट्स बनाकर रिवीजन करना और भी प्रभावी रहेगा।

समय प्रबंधन और स्पीड पर काम करें

परीक्षा में समय सीमित होता है, इसलिए प्रश्नों को तेजी और सही तरीके से हल करना जरूरी है। अभ्यास के दौरान टाइमर लगाकर पेपर हल करें, ताकि आपकी स्पीड और एक्यूरेसी दोनों बेहतर हो सकें।

जॉब अलर्ट

भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

- पद का नाम- जूनियर एग्जीक्यूटिव (इंजीनियरिंग / अकाउंट्स / वेसाइड एमेनिटीज़), सेक्रेटरी BPCL, एसोसिएट एग्जीक्यूटिव (क्वालिटी एश्योरेंस / राजभाषा कार्यान्वयन)
- कुल पद- 250 पद
- योग्यता- डिप्लोमा, B.Com / BBA / B.Sc / BMS / BHM, M.Sc, हिंदी में मास्टर्स, Inter CA / Inter CMA + ग्रेजुएशन
- आवेदन की अंतिम तारीख- 17 मई 2026 से बढ़ाकर 24 मई 2026 कर दी गई है।
- वेबसाइट- www.bharatpetroleum.in

नेशनल हाईवेज एंड फ्रेंचाइजी कॉर्पोरेशन लिमिटेड

- पद का नाम- उप प्रबंधक (तकनीकी कैडर), ई2 ग्रेड विभाग सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार संगठन का प्रकार केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (सीपीएसई) / भारत सरकार का एक उद्यम
- कुल पद- 85
- वेतनमान- रु. 50,000-3%-1,60,000 (ई2 ग्रेड)
- चयन का तरीका- 2024/2025/2026 में गेट स्कोर (सिविल इंजीनियरिंग) में सर्वश्रेष्ठ स्कोर अनिवार्य स्कोर इंजीनियरिंग इंजीनियरिंग में वैध गेट
- वेबसाइट -www.nhidcl.com

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय

- पद का नाम-CSBO ग्रेड-II
- पदों की संख्या-190
- ग्रुप-ग्रुप सी
- वेतन स्तर-स्तर-3 (21,700 + भत्ते)
- योग्यता-10 वीं पास
- आयु सीमा-18 से 25 वर्ष
- वेबसाइट-www.indianarmy.nic.in